हर बच्चा जाए स्कूल

स्मिता जैन

रंग-बिरंगी पुस्तकों, फ़िल्मों और आदर्श किरदारों के ज़रिये बच्चों को स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहन मिल रहा है।

लिज़ा हेडलॉफ़ का दफ़्तर कोई मामूली जगह नहीं है। आकर्षक रंग और चित्रकारी से दमकती दीवारों वाले इस ऑफ़िस में कदम रखते ही एक खूबसूरत कुत्ते ने मेरी ओर कूदते हुए स्वागत किया। बुक शेल्फ़ में दुनिया के कोने-कोने की विभिन्न भाषाओं और डिज़ाइनों की सैकड़ों किताबें करीने से लगी हुई हैं। रचनात्मकता से सराबोर पोस्टरों, टी-शर्ट और कैलेंडरों से कमरे का हर कोना बेहद दिलकश नज़र आ रहा है।

'गोइंग टू स्कूल' नई दिल्ली स्थित एक संगठन ही नहीं, हेडलॉफ़ का सपना भी है। इसकी मदद से वह गरीब, वंचित बच्चों के पढ़ने की ख्वाहिश को पूरा कर रही हैं, उनके ख्वाबों में रंग भर रही हैं। रंग और रचनात्मकता इस संगठन की आधारशिला हैं, मगर पैसा कमाना इसका मकसद नहीं है। हेडलॉफ़ मूल रूप से अमेरिका के एरिजोना राज्य के स्कॉट्सडेल की रहने वाली हैं। वह 1998 में थोड़ी सी पूंजी और चंद संपर्कों के साथ भारत आई थीं। आंखों में था तो बस महिलाओं और बच्चों के लिए कुछ करने का सपना। हेडलॉफ़ अब 31 साल की हैं और उनके माता-पिता स्कॉट्सडेल में ही रहते हैं। नई दिल्ली में कुछ समय एक वैवाहिक पत्रिका में काम करने के बाद हेडलॉफ़ को यूनीसेफ़ ने उड़ीसा, बिहार, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात और हरियाणा के सरकारी स्कूलों में चलने वाली यूनीसेफ़ की परियोजनाओं की सफल गाथाओं को लिपिबद्ध करने के लिए यूनीसेफ़ के संचार सलाहकार के रूप में नियुक्त कर लिया गया।

अपने काम के सिलसिले में किए गए दौरों ने हेडलॉफ़ की ज़िंदगी की मानो दिशा ही मोड़ दी। इन स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे दूरदराज के भिन्न भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों वाले इलाकों से आते थे। इन बच्चों से होने वाली मुलाकातों ने हेडलॉफ़ के मन में 'गोइंग टू स्कूल' के बीज को अंकुरित किया। यह एक मल्टीमीडिया अभियान है जिसकी पूरी परिकल्पना हेडलॉफ़ ने तैयार की। वह कहती हैं, ''यह हर बच्चे के स्कूल जाने और ऐसी प्रेरक शिक्षा में भागीदारी के अधिकार को स्वीकार करता है जिसकी बच्चों के जीवन में प्रासंगिकता हो।''

हेडलॉफ़ का विचार यह था कि बच्चों को पढ़ाने के लिए एक ऐसे कल्पनाशील और प्रेरक माध्यम का सृजन किया जाए, जिसमें भारत के हर स्कूल जाने वाले बच्चे के वास्तविक जीवन की कहानी शामिल हो। वह स्वीकार करती हैं कि शुरू में इस परियोजना के लिए पैसे का इंतज़ाम करने में कई दिक्कतें पेश आईं, लेकिन भारती प्रतिष्ठान की मदद से इस काम में आखिरकार सफलता मिल ही गई। यह प्रतिष्ठान भारती एंटरप्राइजेज की एक धर्मार्थ इकाई है। इस तरह वर्ष 2001 में 'गोइंग टू स्कूल' के सृजन का सपना साकार हो गया। इस मिशन के तहत सबसे पहले बच्चों के लिए किताबों के प्रकाशन की योजना बनाई गई। 'गोइंग टू स्कूल' में बच्चों को स्कूलों की ओर आकर्षित करने के 25 तरीके सुझाए गए हैं। इस पहल के बाद हेडलॉफ़ ने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

आज 'गोइंग टू स्कूल' भारत के बच्चों और शिक्षाविदों मे बेहद लोकप्रिय और कामयाब है। इस श्रृंखला की दस छोटी-छोटी किताबों का तेलुगू, तमिल, उड़िया, कन्नड़ और हिंदी भाषा में अनुवाद किया जा चुका है। इन किताबों को देश के सरकारी स्कूलों में मुफ़्त में बांटा जाना है। इनमें से पांच लाख किताबें उड़ीसा के 45 हज़ार प्राइमरी स्कूलों में बांटी जानी हैं और करीब 50 लाख बच्चे इनका फ़ायदा उठा पाएंगे। हेडलॉफ़ के संगठन ने इसके अलावा नौ लघु फ़िल्में भी बनाई हैं। इनमें से हर फ़िल्म भारत के स्कूल जाने वाले बच्चों की ज़िंदगी के एक-एक दिन के अनुभवों को बयां करती है। इन फ़िल्मों को बच्चों के लोकप्रिय टीवी चैनलों- पोगो, कार्टून नेटवर्क और नेशनल ज्योग्राफिक पर दिन में दो बार दिखाया जाता है। अपनी स्थापना के बाद से ही 'गोइंग टू स्कूल' को अमेरिका की विभिन्न संस्थाओं से

सहयोग मिल रहा है। इनमें प्रमुख हैं– वैश्विक बालकोष, वॉशिंगटन, डी.सी., ग्लोबल गिविंग और अशोका इन्नोवेटर्स फॉर द पब्लिक।

हेडलॉफ़ का यह दृढ़ विश्वास है कि किसी भी बच्चे के जीवन में प्रेरणा की एक अहम भूमिका होती है। 'गोइंग टू स्कूल' कार्यक्रम ऐसे बच्चों की कामयाबी की कहानी बताता है जो तमाम भौगोलिक, शारीरिक और सामाजिक बाधाओं के बावजूद स्कूल जाने और शिक्षा पाने की अपनी ललक को पूरा कर पाए। वह कहती हैं, ''मैं महसूस करती हूं कि मीडिया में इस बात को काफ़ी प्रचार मिलता है कि क्या चीज़ नहीं चली। पर उसके बारे में क्या जो चल जाए। मेरा मानना है कि प्रेरणा से दुनिया बदल सकती है। मैंने ज्यों-ज्यों ज़्यादा यात्राएं कीं, पाया कि शिक्षा से जुड़ी बहुत सी कहानियां हैं, जिन्हें यदि रोचक अंदाज़ में बताया जाए और समझाया जाए कि स्कूल तो मौज-मस्ती के साथ बहुत कुछ सीखने की जगह है, तो उम्मीद से बेहतर नतीज़े हासिल हो सकते हैं। इसके साथ ही हमारा समाज, संगठन और व्यक्तिगत स्तर पर भी लोग इस बात की कोशिश कर सकते हैं कि बच्चों के स्कूल जाने के अंदाज़ को बदला जाए। वे अगर सोचें कि ऐसा संभव हो सकता है, तो ऐसा हकीकत में हो सकता है।''

'गोइंग टू स्कूल' अब अपनी यात्रा के दूसरे चरण में है। अपनी 'गर्ल स्टार्स' परियोजना के तहत वह ऐसी लड़कियों और महिलाओं को 'नायिका' का दर्ज़ा देने की मुहिम में जुटा हुआ है, जिन्होंने स्कूल जाकर अपनी और दूसरों की ज़िंदगी को संवार दिया, उसके मायने बदल डाले। इस सिलसिले में हेडलॉफ़ और उनके दिल्ली स्थित छह सहयोगियों ने उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, झारखंड और मध्य प्रदेश के हिंदीभाषी क्षेत्रों का दौरा किया तथा शहरों, कस्बों और गांवों में लोगों से बातचीत करके ऐसी 15 महिलाओं को तलाशने का काम किया जो 'नायिका' का दर्ज़ा पा सकें और लड़कियों को पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रोत्साहित कर सकें।

इनमें से एक 'गर्ल स्टार' हैं– माधुरी कुमारी। वह उत्तर प्रदेश के एक गांव में रहती हैं। गांव की सामाजिक परंपरा की धारा से इन्होंने हार नहीं मानी और नेता बनकर ही मानीं। बिहार की 17 साल की अनिता कुशवाहा ने राज्य की पहली महिला मधुमक्खी पालक बनने का गौरव हासिल किया है। ऐसी सभी नायिकाओं ने प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी की। शिक्षा इनके लिए अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने का एक सशक्त माध्यम थी। हेडलॉफ़ बताती हैं, ''हमारी गर्ल स्टार्स साधारण सी लड़कियों की असाधारण कहानियां हैं। ये बताती हैं कि किसी काम को लाखों लड़कियां करती हैं, मगर लाखों में से सिर्फ़ एक ही उसे पूरा कर पाती है। एक गर्ल स्टार एक ऐसी युवा लड़की या महिला है जो उस काम को करने में सक्षम है जो वह कर रही है, क्योंकि वह एक ऐसे बड़े समुदाय की सदस्य है जहां हर किसी को एक सार्थक बदलाव के लिए मिल-जुलकर काम करना है। उसमें ऐसा करने का साहस होना चाहिए और हर किसी को साथ लेने की शक्ति होनी चाहिए।'' यूनिसेफ़ ने इन गर्ल स्टार्स को इस साल रेडियो और टीवी पर लाने की योजना बनाई है।

हेडलॉफ़ और उनके सहयोगी अब अपनी एक नई और खासी महत्वाकांक्षी परियोजना (उद्यमी बनिए) पर काम कर रहे हैं। इसके तहत 50 पुस्तकों, 13 फ़िल्मों और 30 किश्तों के रेडियो कार्यक्रमों के जरिए भारत के वंचित बच्चों को उद्यमिता की 50 कहानियों से रूबरू कराया जाएगा, ताकि वे अपनी, अपने समुदाय और इस तरह देश की किस्मत बदल सकें। इस कार्यक्रम का मकसद बच्चों को ऐसे हुनर से लैस करना है, जिससे वे पढ़ाई खत्म करने के बाद कमाई कर सकें और सामाजिक बदलाव में एक सकारात्मक भूमिका अदा कर सकें।

'गोइंग टू स्कूल' हालांकि रंगों और मौज-मस्ती के ज़रिए अपनी बात कहता है, मगर इसमें दो राय नहीं कि बच्चों की ज़िंदगी में सकारात्मक बदलाव लाने में यह एक अहम भूमिका निभा रहा है। हेडलॉफ़ को उम्मीद है कि उनका यह सपना, उनकी ये कोशिशें पूरे भारत और दुनिया के लिए एक मिसाल बनेंगी। हेडलॉफ़ अपनी इस मुहिम को पूरी दुनिया में फैलाने (गोइंग ग्लोबल) का इरादा तो रखती हैं, मगर 'गोइंग होम' यानी घर वापसी का उनका कोई इरादा नहीं है।

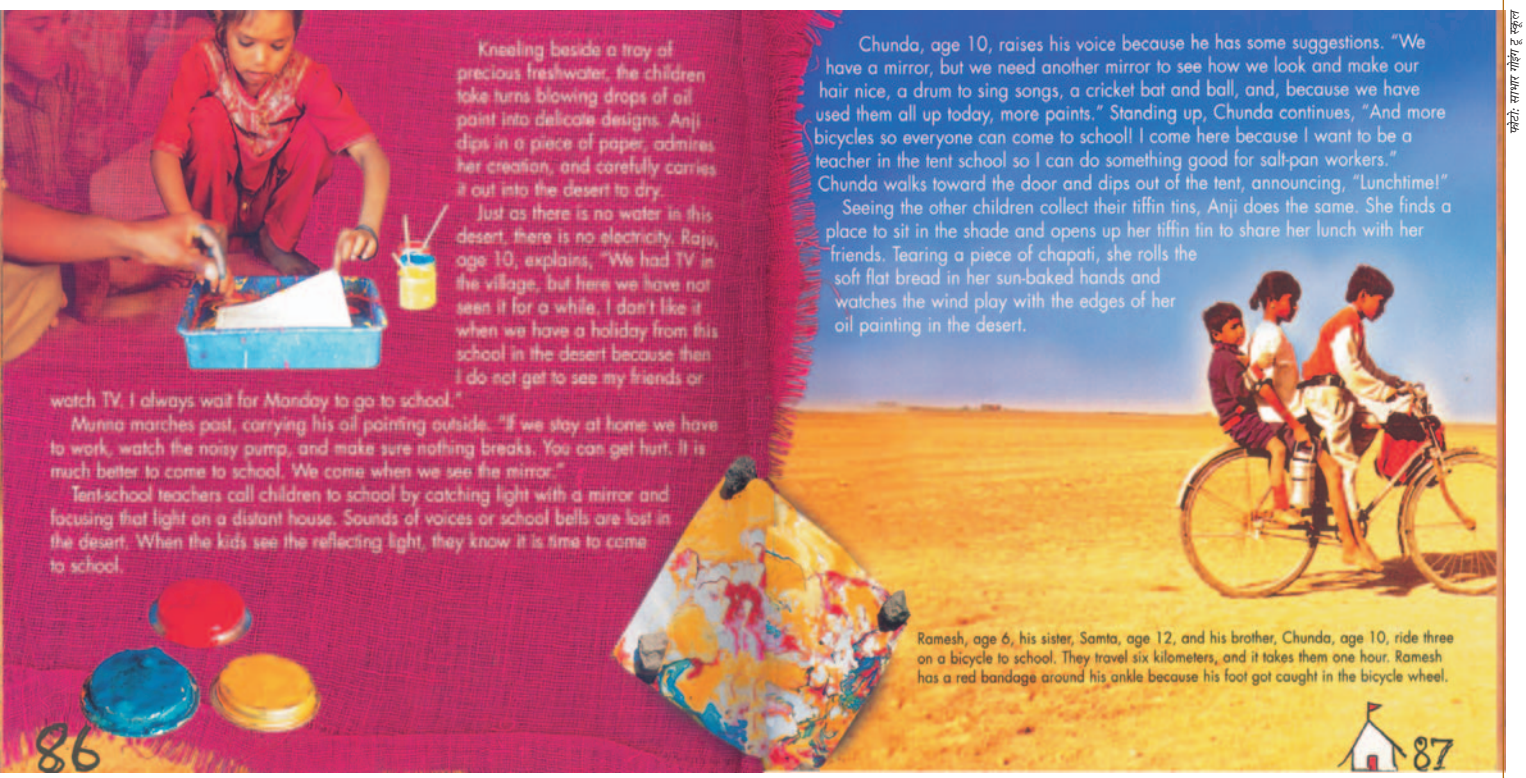

फ़ोटो: साभार गोइंग टू स्कूल

रंग-बिरंगी मिनी बुक गोइंग टू स्कूल इन इंडिया *में भौगोलिक तथा सामाजिक बाधाओं और शारीरिक अक्षमता के बावजूद स्कूल जाने वाले बच्चों की सकारात्मक गाथाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है।*

वह कहती हैं, ''मैं हर सुबह इस अहसास के साथ जागती हूं कि मुझे आज क्या करना है। यह अपने आप में महत्वपूर्ण है। मेरे इस अहसास से बच्चे अपनी ज़िंदगी को रोज़मर्रा जिस नज़रिये से देखते हैं, शायद उसे तो नहीं बदला जा सकता, मगर बड़े पैमाने पर देखा जाए तो एक क्षण के लिए, ऐसा होता है।'' वह कहती हैं, ''प्रेरणा एक सेकेंड में मिलती है और आपकी ज़िंदगी को बदल देती है। यही काम हम करते हैं। सप्ताह में जितने दिन संभव हो, हम बच्चों को प्रेरित करते हैं और बदलाव के लिए प्रोत्साहित करते हैं।''

***स्मिता जैन** स्वतंत्र अमेरिकी लेखिका हैं। वह नई दिल्ली में रहती हैं।*